# भारत - रूस सामरिक सम्बन्ध : अमेरिकी प्रभाव

डॉ० राजेश कुमार

असिस्टेन्ट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग

एस० एस० एस० वी० एस० राजकीय स्नातकोत्तर

महाविद्यालय चुनार, मीरजापुर

वर्तमान शताब्दी के पहले दशक में लगभग एक दशक की अराजकता के बाद जब रूस ने संक्रमण काल के ढुलमुलपने से बाहर आना शुरू किया तो उसने अपने इर्द–गिर्द के देशों और यूरोप में कूटनीतिक तथा सैन्य दृष्टियों से समाप्त हो चुकी भूमिका को फिर से निभाने की मंशा दिखानी शुरू कर दी। इतिहास में ऐसा कम ही हुआ है जब किसी ध्वस्त महाशक्ति की सेना को इतने कम समय में इतना दर्द और अपमान सहना पड़ा हो जितना सोवियत संघ के विघटन के बाद रूसी सेना को सहना पड़ा। रूस के राष्ट्रपति के रूप में ब्लादिमिर पुतिन के सत्ता संभालने के पहले तक वहाँ पूरी तरह अराजकता फैल चुकी थी, जिसमें देश का महत्व घटता जा रहा था और आर्थिक अस्त–व्यस्तता फैली हुई थी।

नई सदी के आगमन के साथ ही रूसी राजनीति में एक रोमांचक युग प्रारम्भ हुआ। सन् 2000 में ब्लादिमिर पुतिन क्रेमलिन के सत्ता शिखर पर पहुँचे, स्मृति के गलियारों में आठ–साल पीछे जाने पर तब और पुतिन के आने के बाद से अब तक रूस के विकास और उन्नति को देखा जा सकता है। येल्तसिन के दौर में पश्चिमी देशों के ऋणों में गले तक फँसा रूस अब तेल की कीमतें लगातार नीचे जाने के बावजुद पश्चिमी देशों से मिल रहे ऋण को मना करने की स्थिति में है। उस दौर में रूस की वार्षिक आर्थिक प्रगति शून्य थी तो पिछले एक दशक से यह दर लगभग सात प्रतिशत वार्षिक है। भारत और रूस उस समय केवल मित्र थे तो अब वे सामरिक भागीदार भी हैं। तत्कालीन रूस अपने सीमावर्ती काकेशियाई और केन्द्रीय एशिया के क्षेत्रों में नाटों के बढ़ते प्रभाव से चिन्तित था, तो भी मई 2010 को नाजी जर्मनी पर सोवियत की विजय की 65वीं वर्षगाँठ मनाते हुए उसने मास्को के लाल चौक पर नाटों देशों के सैनिकों की परेड की व्यवस्था खुद की। बीसवीं शताब्दी के अन्तिम दशक और वर्तमान शताब्दी के पहले और दूसरे दशक की तुलना करे तो दोनों अवधियों में तीव्र विरोधाभास दिखता है। पहले युग में येल्तसिन का प्रभुत्व था तो दूसरी अवधि के प्रतिनिधि पुतिन हैं।[1]

पुतिन की रहस्यात्मकता जितना रूसियों के दिलों–दिमाग पर छायी रहती है उतनी ही वह अमेरिका और अन्य पश्चिमी देशों पर भी असर डालती है कि कैसे इस आदमी ने अपने कुशल नेतृत्व से रूस को पुनः विश्व की प्रमुख ताकत के रूप में स्थापित किया।[2] तेल की बढ़ती कीमतों ने रूस को ऊर्जा के मामलों में एक महाशक्ति बना दिया है। पुतिन और उनके सहयोगियों में जो आत्मविश्वास है, वह न तो ब्रेझनेव और उनके सोवियत पूर्ववर्तियों में था, और न ही रूस के लोकतांत्रिक माने जाने वाले गोर्बाचोव और येल्तसिन जैसे नेताओं में था। 2000 में जब पुतिन

राष्ट्रपति बने तो दक्षिण एशिया के साथ रूस के सम्बन्धों में एक नया अध्याय जुड़ गया। हालांकि वे येल्तसिन और कोजिरेव की तरह पश्चिम परस्त नहीं थे और न ही प्रिमकोव की तरह यूरेशियावादी। उन्होंने अपनी विदेश नीति में किसी भी विचारधारा अथवा साम्राज्यवादी महत्वाकांक्षा की बजाय रूस के राष्ट्रीय हितों के व्यवहारिक पक्ष पर जोर दिया। इस तरह वैचारिक सोवियत युग और येल्तसिन शासन काल की असंगत नीतियों के विपरीत, पुतिन ने मास्को के राष्ट्रीय हितों के व्यापक सन्दर्भ में एक दक्षिण एशियाई नीति बनाने की कोशिश की।[3]

जब विश्व राजनीति एक ध्रुवीय अमेरिका की तरफ घूम रही है, तो भारत और रूस, विश्व को एकध्रुवीय से बहुध्रुवीय बनाने के सिद्धान्तों के पक्ष में एक साथ खड़े हैं। इस विचार को चीन और कई अन्य देशों द्वारा भी समर्थन दिया गया है। यह दृष्टिकोण बहुध्रुवीय शक्तियों के सह–अस्तित्व का और अन्तर्राष्ट्रीय संघ की सम्भावना का समर्थन करता है, जिसमें सामूहिक सुरक्षा की अवधारणा, समान क्षेत्रीय रूचि का विकास, स्वतंत्र विदेश नीति की सम्भावना और संयुक्त राष्ट्र को मजबूत बनाना तथा उसके द्वारा किये गये अन्तर्राष्ट्रीय निर्णय को मजबूत, लोकतान्त्रिक तथा सशक्त रूप से लागू करना आदि शामिल हो। [4]

विश्व व्यवस्था के एक–ध्रुवीय वातावरण में अमेरिका पहले की तुलना में ज्यादा आत्मविश्वास के साथ खुद को दूसरों के आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप करने की ताकत से लैस समझता है। अमेरिका ने रूस द्वारा भारत को क्रायोजनिक प्रौद्योगिकी को बेचने का खुलेआम विरोध किया तथा उसने भारतीय अन्तरिक्ष अनुसंधान संगठन (आई0एस0आर0ओ0) पर प्रतिबन्ध लगा दिया तथा रॉसकॉसमॉस पर भी दबाव बढ़ाया। लोकतंत्र और मानवाधिकार के नाम पर दूसरे देशों में सैन्य हस्तक्षेप, अन्तर्राष्ट्रीय कानून तथा संस्थान के विस्तार पर रोक, सैनिक ताकत के आधार पर क्षेत्रीय प्रभुत्व का निर्माण आदि यह सिद्ध करता है कि अन्तर्राष्ट्रीय व्यवस्था एक अराजक व्यवस्था है। किसी के आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप न करने का सिद्धान्त अमेरिका और रूस के बीच तनाव का स्थायी कारण पहले भी रहा है और आज भी है। भारत भी दूसरे देशों के आन्तरिक मामलों में सैन्य हस्तक्षेप का विरोध करता है। सोवियत पश्चात् वर्षों में बिना किसी महाशक्ति से युद्ध के खतरे के अमेरिका ने लोकतंत्र, आतंकवाद एवं मानवाधिकार के नाम पर हैती, सोमालिया, इराक, अफगानिस्तान, लीबिया और सीरिया की जमीन पर अपने सैनिक उतार दिये।[5] जार्जिया और यूक्रेन के मामलों में रूस द्वारा खुलकर हस्तक्षेप तथा सितम्बर 2015 में रूस द्वारा सीरिया में सैंन्य हस्तक्षेप ने अमरीका और रूस के मध्य शीत युद्ध की यादों को ताजा कर दिया। भारत के दोनों पक्षों से करीबी सम्बन्ध हैं। अगर इन मुल्कों के बीच तनाव की स्थिति बनती है तो भारत के लिए स्थिति बेहद जटिल हो जायेगी। तनाव की स्थिति में भारत युद्ध नहीं चाहेगा बल्कि संयुक्त राष्ट्र के रास्ते चलने की बात करेगा।

भारत और अमेरिका के मध्य असैन्य परमाणु समझौते ने भारत को चारों तरफ से अमेरिका का ऋणी बना दिया तथा विदेश नीति में उसने एक पक्षीय गठबन्धन को समर्थन प्रदान किया। ईरान के नाभिकीय हथियार हसिल करने के प्रयासों से जुड़े मुददों पर भी रूस और अमेरिका बीच संघर्ष रहा है। रूस ने ईरान पर प्रतिबन्ध लगाने के पश्चिमी देशों के प्रस्ताव पर सहमति जताने से साफ इन्कार कर दिया था, जबकि अमेरिका के एक पक्षीय ईरान पर प्रतिबन्ध का भारत द्वारा समर्थन

किया गया। साथ ही नई दिल्ली, सीरिया के संदर्भ में भी पश्चिमी अवधारणा को अपना रहा है। अमेरिका अपने सहयोगियों से या तो अपने साथ या अपने विरुद्ध की उम्मीद करता है और उसने इसे बार–बार स्पष्ट रूप से कहा है। यद्यपि भारत बहुध्रुवीय विश्व का समर्थन करता है लेकिन साथ ही साथ एकल ध्रुवीय विश्व के साथ खड़ा होना चाहता है। एकलध्रुवीय विचार तथा अमेरिकी राष्ट्र की पहली प्राथमिकता भारत और रूस के बीच दूरी बढ़ाने में है।

अमेरिका के साथ भारत के बढ़ते सम्बन्धों के परिप्रेक्ष्य में यह स्वभाविक प्रश्न उठता है कि क्या रूस अभी भी भारत के लिए महत्वपूर्ण है? दूसरा प्रश्न यह है कि भारत, रूस के साथ अपने सम्बन्धों को कितना गहराई तक ले जा सकता है ? विदेश नीति में, पश्चिम से सम्बन्ध स्थिर रखते हुए रूस प्रमुख एशियाई देशों– अफगानिस्तान, तजाकिस्तान, पाकिस्तान व अन्य से चतुर्दिक सम्बन्ध विकसित कर रहा है। यद्यपि भारत– रूस सम्बन्ध अपनी तीव्रता बनाये हुए हैं, किन्तु कुछ ऐसे मुद्दे हैं जिनका हल खोजा जाना बाकी है। रूस ने सकारात्मक रूप से भारत के साथ रणनीतिक, नाभिकीय, रक्षा तथा अन्तरिक्ष के क्षेत्रों में बेहतर सम्बन्ध स्थापित किया। नाभिकीय रूप से उन्नत रूस ने भारत की सिविल नाभिकीय क्षमता को बढ़ाने में महत्वपूर्ण मदद की। इसने विश्व समुदाय की असहमति के बावजूद 1998 में भारत के कुडानुकुलम परियोजना को नाभिकीय रिएक्टर की आपूर्ति की। [6] इसी वर्ष 10 वर्षीय सैन्य व तकनीकी सहयोग समझौता किया। रूस भारत को नाभिकीय ईंधन की आपूर्ति तथा भारत को पनडुब्बी पट्टे पर देने पर भी सहमत हुआ। मार्च 2010 में रूसी प्रधानमंत्री पुतिन की भारत यात्रा के दौरान परमाणु ऊर्जा के शान्तिपूर्ण उपयोग के लिए समझौते पर हस्ताक्षर हुए। राष्ट्रपति मेदवदेव की दिसम्बर 2010 में भारत यात्रा के दौरान राज्य परमाणु ऊर्जा सहयोग रोस्टोम (Rosatom) व परमाणु ऊर्जा विभाग ने विज्ञान व तकनीकी सहयोग व संयुक्त अध्ययन पर बल दिया।

रक्षा क्षेत्र में, भारत–रूस सहयोग सह–उत्पादक, संयुक्त विकास व वैज्ञानिक सहयोग (ब्रह्मोस मिसाइल, नाभिकीय पनडुब्बी, पाँचवीं पीढ़ी के लड़ाकू एयरक्राफ्ट, बहुआयामी परिवहन एयर क्राफ्ट, टी–90 युद्धक विमान) के स्तर तक पहुँच गये हैं। दोनों देशों ने अपने सामरिक सम्बन्धों को और मजबूत करने के लिए सैन्य तकनीकी सहयोग पर भारत–रूस अन्तर सरकारी आयोग (आई0आर0आई0जी0सी–एम0टी0सी0) का कार्यकाल 10 साल बढ़ा दिया है। इस आयोग का मौजूदा कार्यकाल 2010 तक ही था। सोवियत संघ ने भारत के अन्तरिक्ष उद्योग को बढ़ाने में मदद की थी। वर्तमान में भारत, रूस के साथ चन्द्रयान–2 तथा कुछ अन्य अन्तरिक्ष परियोजनाओं में रूस के साथ भागीदार है।[7]

भारत, रूस से द्विपक्षीय सम्बन्धों और यूरेशिया में रणनीतिक भागीदारी के सन्दर्भ में अति उत्सुक रहा है। एक मजबूत रूस मध्य एशिया, पाक–अफगान क्षेत्र, ईरान तथा हमारे पड़ोस में शान्ति एवं स्थायित्व के लिए आवश्यक है। आगे चलकर रूस, भारत को यूरेशिया क्षेत्र में भारत की भागीदारी बढ़ाने में मददगार हो सकता है जो रूस–चीन–भारत संघ के रूप में हो सकते हैं। भारत को खाड़ी देशों, पश्चिम व रूस के मध्य त्रिस्तरीय वार्ता शुरू करने में पहल करनी चाहिए। भारत, रूस और पश्चिम के मध्य व्यापक सहमति और पारस्परिक लाभप्रद सहयोग सभी पक्षों के लिए शान्ति स्थापित करने में मदद करेगी।

यद्यपि उभरते हुए चीन का यूरेशिया पर बढ़ता प्रभाव भारत को यूरेशिया महाद्वीप में अपने एक मात्र विश्वसनीय भागीदार के साथ सम्बन्ध बनाये रखने की चुनौती उत्पन्न करता है। वास्तव में चीन पहले से ही लाभ की स्थिति में है क्योंकि ऊर्जा की कमी से जूझ रहे भारत को रूसी ऊर्जा निर्यात का कोई प्रत्यक्ष मार्ग नहीं है। यूरेशिया में चीन–रूस की निकटता भारत के पक्ष में नहीं होगी।

दिसम्बर 2010 में रूस के राष्ट्रपति दमित्री मेदवदेव भारत के दौरे पर आते हैं तो स्थिति थोड़ी भिन्न नजर आती है। दोनों देश बहुमार्गी विदेशी नीति को अपनाये हुए हैं। इन बदली हुई स्थितियों के बावजूद रूसी राष्ट्रपति दमित्री मेदवदेव का भारत दौरा उस साल ओबामा, सरकोजी और बेन जियाबाओं की तुलना में अधिक लाभदायक और महत्वपूर्ण रहा। इस दौरान न केवल निजी और सरकारी क्षेत्रों में तीस समझौते हस्ताक्षरित किये गये, बल्कि दोनों पक्षों की ओर से लम्बे समय तक चलने वाला पुख्ता साझेदारी का संकेत देने वाले वक्तव्य भी सामने आये। बैठक के बाद प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह का यह वक्तव्य कि रूस का भारत के साथ सम्बन्ध विशेष एवं विशेषाधिकार युक्त है, यही सुझाता है कि भारत अमेरिका के कितने ही नजदीक क्यों न आ जाये, रूस के साथ उसके सम्बन्धों पर आँच नहीं आयेगी। रूसी पक्ष द्वारा अपने और भारत के लिए "नाभिकीय शस्त्रों के स्वामित्व वाले देश" शब्दों का प्रयोग करना और एन0एस0जी0 समूह की सदस्यता के लिए समर्थन करने का वायदा करना यही जाहिर करता है कि रूस भारत को नाभिकीय शक्ति के रूप में मान्यता देता है।[8] रूस स्पष्ट रूप से सुरक्षा–परिषद में भारत की स्थायी सदस्यता की दावेदारी का समर्थन करता है। कुछ विशेषज्ञ यह मानने लगे थे कि इस मामले में चीन और अमेरिका के टालू बयानों को देखते हुये रूस का उत्साह भी ठण्डा पड़ने लगा है, लेकिन मेदवदेव ने कहा कि सुरक्षा परिषद में स्थायी सीट पाने का भारत 'पूरा हकदार' है और सुयोग्य भी।

रूसी राष्ट्रपति ने भारत को परमाणु शक्ति के रूप में मान्यता दी है। उन्होंने भारत की तुलना अमेरिका, फ्रान्स और रूस से की है। भारत को उन्होंने परमाणु संगठनों की सदस्यता ग्रहण करने में सहयोग का आश्वासन दिया है। रूस चाहता है कि भारत शंघाई परिषद और एपेक जैसे क्षेत्रीय संगठनों का सदस्य बने और उनमें अग्रणी भूमिका निभाये। दोनों देशों ने परमाणु ऊर्जा के शान्तिपूर्ण उपयोग के लिए संयुक्त कार्यक्रम चलाने की भी इच्छा प्रकट की है। ये कार्यक्रम अन्य देशों में भी चलेंगे। इस तरह का परमाणु सहयोग अभी तक किसी अन्य महाशक्ति के साथ भारत ने प्रारम्भ नहीं किया है। ऐसा लगता है कि मानों भारत और रूस के सम्बन्धों में वैसी घनिष्ठता उत्पन्न होती जा रही है, जैसी कभी भारत–सोवियत सम्बन्धों में थी।

भारत और रूस पिछले दो दशकों से ज्यादा समय से आतंकवाद का सामना कर रहे हैं। भारत पिछले 25 वर्षों से सीमापार आतंकवाद से जूझ रहा है। रूसी संघ में आतंकवादी तनाव कुछ चेचन समूहों द्वारा चलाये गये अलगाववादी आन्दोलन से जुड़ा है। रूस में आतंकियों ने सैकड़ों जनता की हत्या की और आज देश की स्थिरता व शान्ति के लिए खतरा बने हुये हैं। केन्द्रीय एशियाई गणराज्यों में इस्लामिक अतिवादियों के उदय रूस और इसके पड़ोसियों को विघटित कर सकते हैं। हिजबुल तहरीर, उजबेकिस्तान इस्लामिक आन्दोलन और अफगानिस्तान में तालिबान जैसे और अन्य अतिवादी संगठन इस क्षेत्र में शान्ति एवं स्थिरता के लिए खतरा उत्पन्न कर रहे हैं।[9]

चेचन एवं दागिस्तान आतंकियों ने मास्को के शहरी एवं सिविल क्षेत्रों में निरन्तर हमले किये जिसमें सैकड़ों निर्दोषों की जान गयी।

चेचेन विवाद की तरह ही भारत और पाकिस्तान के मध्य कश्मीर विवाद है जिसकी जड़ें 60 साल पुरानी और स्वतंत्रता संघर्ष से जुड़ी हुई है। जम्मू–कश्मीर को लेकर भारत और पाकिस्तान के मध्य कई युद्ध हो चुका है। जम्मू–कश्मीर में आतंकियों को प्रशिक्षित करके पाकिस्तान भारतीय सीमा में भेज रहा है। अधिकांश आतंकी जो कि चेचेन्या में सक्रिय हैं, अफगानिस्तान में युद्ध के दौरान अमेरिकी एजेन्सियों द्वारा प्रशिक्षित किये गये थे। कुछ आतंकियों को पाकिस्तानी एजेन्सियों द्वारा कश्मीर में भेज दिया गया तथा कुछ चेचेन्या में सक्रिय रहे हैं। कश्मीर तथा भारत के दूसरे राज्यों में आतंकियों ने सैकड़ों निर्दोष लोगों की जाने लीं। ऐसी स्थिति में, भारत और रूस दोनों को आतंकवादी गतिविधियों को रोकने हेतु मजबूती से एक साथ आने की जरूरत है।

भारत और रूस इस बात को महसूस करते हैं कि आतंकवाद के खिलाफ अमेरिकी गठबन्धन ने चेचन्या और पाकिस्तान प्रायोजित कश्मीर के आतंकवादी समूहों पर पर्याप्त ध्यान नहीं दिया तथा वह केवल अफगानिस्तान व ईराक पर ही विशेष ध्यान दिया।[10] अमेरिका ने चेचन विद्रोहियों के खिलाफ रूसी सैन्य कार्यवाही को मानवाधिकार का उल्लंघन बताते हुये रूस पर हमला बोला था। इसके जवाब में रूस ने कहा था कि चेचन आतंकवादियों के खिलाफ उसकी कार्यवाही पूरी तरह से जायज थी। रूस ने कहा कि चेचन्या में रूसी कार्यवाही का विरोध करके अमेरिका कैस्पियन सागर के तटवर्ती और मध्य एशिया के अस्थिर इलाकों में रूस के लिए समस्याएं खड़ी करना चाहता है। अमेरिका की एकतरफा कार्यवाही के खिलाफ क्षोभ ने रूस को स्वतः ही चीन और भारत के साथ नजदीकी से लाकर खड़ा कर दिया।

कश्मीर मामलें पर रूस का मत हमेशा समय और शासन प्रणाली बदलने के बाद भी बिना शर्त भारत के साथ रहा है। प्रत्येक रूसी नेता येल्तसिन से लेकर पुतिन तक ने इस बात को दोहराया। रूस ने भारत को सन्तुलित रखने के लिए पाकिस्तान से सम्बन्ध बनाने की कोशिश कभी नहीं की, जबकि अमेरिका कश्मीर में भारतीय पक्ष का कभी खुलकर समर्थन नहीं किया। उसने पाकिस्तान के लिए भारत से अपने रिश्तों में दूरी हमेशा बनाए रखी। अमेरिका को अपनी अफगानिस्तान नीति के लिए पाकिस्तान की आवश्यकता है। वह भारत और पाकिस्तान में इस प्रकार सन्तुलन बनाया हुआ है। अमेरिका के लिए विभिन्न कारणों से अफगानिस्तान में सैन्य कार्यवाही के सन्दर्भ में पाकिस्तान एक महत्वपूर्ण भागीदार रहा है। वर्तमान में अफगानिस्तान में 17 साल से जारी संघर्ष को समाप्त करने तथा शान्ति स्थापना के लिए अमेरिका और तालिबान के बीच तारी बातचीत में पाकिस्तान मध्यस्थ की भूमिका निभा रहा है। भारत और रूस इस बातचीत पर नजदीकी से निगाह बनाये हुए हैं।

रक्षा मामलों के जानकार सुशांत सरीन के अनुसार भारत ने बीते 20 सालों में चीन,रूस और अमेरिका के साथ सम्बन्धों में रणनीतिक सन्तुलन बनाने की काशिश की। अमेरिका के साथ बढ़ती दोस्ती के बाद भी भारत, रूस को नहीं छोंड़ सकता। इसकी वजह ये है कि भारत का सैन्य साजों सामान अभी भी 70 फीसदी रूस पर निर्भर है। अगर भारत इस पर कोई रूख अख्तियार करता है तो उसके समक्ष सैन्य उत्पाद और गोला बारूद की विकट समस्या खड़ी हो सकती है।[11] प्रधानमंत्री

नरेन्द्र मोदी ने रूस के साथ अक्टूबर 2018 में बहुचर्चित और बहुप्रतीक्षित एस–400 मिसाइल एयर डिफेंस सिस्टम समझौते के अवसर पर कहा "भारत रूस के साथ अपने सम्बन्धो को सर्वोच्च प्राथमिकता देता है। तेजी से बदलते युग में हमारे सम्बन्ध और भी प्रासंगिक हो गये हैं"।[12]

## निष्कर्ष :

वर्तमान शताब्दीं पिछली शताब्दीं से अनेक मामलों में अलग है। शीतयुद्ध, द्विध्रुवीय विश्व भूतकाल की बात हो गयी। आज की स्थिति में रूस और अमेरिका अपने सम्बन्धों की प्रकृति को साफ–साफ परिभाषित करने में असमर्थ है कि वे सहयोगी हैं या शत्रु, साझेदार हैं या प्रतिस्पर्धी या फिर इन सभी भूमिकाओं का मिश्रण। वर्तमान अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक और राजनीतिक वास्तविकताओं के बीच दोनों देश एक–दूसरे को ऐसी शक्ति के रूप में देखते हैं जिनके पास पहली सी हैसियत नहीं है। अमेरिका को रूस के भविष्य पर भरोसा नहीं है तो रूस भी बार–बार याद दिलाता रहता है कि अमेरिकी आधिपत्य का युग समाप्ति की ओर है। आने वाले वर्षों में दुनिया का स्वरूप वैश्वीकरण और बहुध्रुवीयता की ओर होगा। ऐसी स्थिति में भारत–रूस सम्बन्ध बदलते वक्त की अन्तर्निहित जटिलताओं के साथ प्रतिस्पर्धात्मक दौर में प्रवेश कर रहे हैं। जैसे कि भारत–अमेरिकी सम्बन्ध, भारत–रूस सम्बन्धों को उन क्षेत्रों में भी प्रभावित कर रहा है, जहाँ दोनों देशों के गहरे रिश्ते हुआ करते थे। आर्थिक मोर्चे पर भारत–अमेरिकी व्यापार और वाणिज्य सम्बन्ध की सम्भावनाएं बेहतर हुई हैं। राजनीतिक और कूटनीतिक स्तर पर, विश्वव्यापी आतंकवाद ने भारत को अमेरिका के नजदीक लाने में मदद की है, जिससे द्विपक्षीय सूचना का प्रवाह, संयुक्त सैन्याभ्यास और महत्वपूर्ण मुद्दों पर आपसी समझ बढ़ी है। यद्यपि भारत–अमेरिका की बढ़ती नजदीकी भारत–रूस सम्बन्धों पर प्रतिकूल प्रभाव नहीं डाल रही है बल्कि यह तृपक्षीय सम्बन्धों की सम्भावना को व्यक्त करती है। यह सम्बन्ध भारत को केन्द्र में रखकर रूस और अमेरिकी सम्बन्ध की सम्भावनाओं का द्वार खोलती है।

## संदर्भ– ग्रन्थ


1. दाश, पी0एल0, ''अदम्य रूस'' वर्ल्ड फोकस, अंक–1, दिल्ली, जनवरी 2011, पृ0 22–23
2. दाश, पी0एल0, ''अदम्य रूस'' वर्ल्ड फोकस, अंक–1, दिल्ली, जनवरी 2011, पृ0 23
3. स्टील, जोनाथन, "नये रूस के नायक की मुश्किलें", हिन्दुस्तान वाराणसी/लखनऊ, 29 सितम्बर 2007
4. M.Chenoy, Anuradha, -- "India-Russia :Allies in the International Political System in Stobdan (ed.) India-Russia Strategic Partnership Common Perspectives, IDSA, New Delhi, 2010, p. 132
5. भदौरिया, संजीव, ''रूस–अमेरिका सम्बन्ध : शीतयुद्ध की शत्रुता से व्यवहारिक मित्रता तक, वर्ल्ड फोकस, अंक–1, दिल्ली, जनवरी 2011, पृ0 3
6. Purushottam, Smita, "Russia in India's National Strategy in Venkatshamy, Krishnappa and George, Princy (ed.) "Grand Strategy for India 2010 and Beyond" IDSA, New Delhi, 2012, pp. 235-236

7. Lele, Ajey, "Indo-Russian Space Cooperation in Das Kundu, Nivedita (ed.) India-Russia Strategic Partnership Challenges and Prospects, Indian Council of World Affairs (ICWA), New Delhi, 2010, p. 45

8. राष्ट्रीय सहारा, वाराणसी, 23 दिसम्बर 2010

9. Bahadur, Kalim, "International Terrorism and Indo-Russian Relation" in Chopra, V.D (ed.) Significance of Indo-Russian Relations in 21st Century, Kalpaz Publications, Delhi, 2008, p. 229

10. Mehta, Suresh, "India's National Security Challenges An Arms Forces, Overview" at India Habitat Centre 10 August 2009

11. www.bbc.com/hindi, 14 april 2018

12. www.navbharattimes.com, 05 oct. 2018